ज्योतिष गहन आत्म-अन्वेषणात्मक वार्ता

ज्योतिषाचार्य
तेजस्कर पाण्डेय

अंतत: यह कहा जा सकता है कि ज्योतिष और परामर्श का संबंध एक अत्यंत गहन और व्यापक प्रक्रिया है, जिसमें मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, दार्शनिक और व्यवहारिक सभी आयाम सम्मिलित होते हैं. यह केवल भविष्यवाणी करने का साधन नहीं है, बल्कि यह एक ऐसा माध्यम है, जो व्यक्ति को अपने जीवन को समझने, अपनी भावनाओं को संतुलित करने और अपने निर्णयों को सार्थक बनाने में सहायता करता है. यदि इसका उपयोग विवेकपूर्ण, नैतिक और संतुलित दृष्टिकोण के साथ किया जाए, तो यह मानव जीवन के समग्र विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है. इस प्रकार ज्योतिष एक ऐसा सेतु बन जाता है, जो व्यक्ति के आंतरिक संसार और बाह्य वास्तविकताओं के बीच सामंजस्य स्थापित करता है और उसे एक संतुलित, सार्थक और उद्देश्यपूर्ण जीवन की ओर अग्रसर करता है, जहाँ ज्ञान, अनुभव और संवेदना का समन्वय एक उच्चतर जीवन-दृष्टि का निर्माण करता है.

ज्योतिष का परामर्श के रूप में उपयोग मानव जीवन की जटिलताओं को समझने का एक अत्यंत सूक्ष्म, गहन और बहुआयामी माध्यम है, जो केवल ग्रह-नक्षत्रों की गति का विश्लेषण नहीं करता, बल्कि मानव चेतना, भावनात्मक संरचना और जीवन-अनुभवों के साथ एक सशक्त अंतर्संबंध स्थापित करता है. आधुनिक संदर्भ में ज्योतिष का स्वरूप एक संवादात्मक प्रक्रिया के रूप में विकसित हुआ है, जहाँ ज्योतिषी और जिज्ञासु के मध्य केवल प्रश्नोत्तर नहीं, बल्कि एक गहन आत्म-अन्वेषणात्मक वार्ता होती है. इस प्रक्रिया में व्यक्ति अपने जीवन की घटनाओं, मानसिक द्वंद्वों, आशंकाओं और आकांक्षाओं को एक सुव्यवस्थित रूप में व्यक्त करता है, और ज्योतिष उन अनुभवों को एक प्रतीकात्मक भाषा प्रदान करता है, जिसके माध्यम से वह अपने जीवन को अर्थपूर्ण ढंग से समझने लगता है. इस प्रकार ज्योतिष केवल घटनाओं का पूर्वानुमान करने का साधन नहीं, बल्कि जीवन को समझने और उसे दिशा देने का एक गहन उपकरण बन जाता है.

इस प्रक्रिया का केंद्रीय आधार जन्मकुंडली होती है, जो व्यक्ति के जीवन का एक प्रतीकात्मक मानचित्र प्रस्तुत करती है. इसमें ग्रहों की स्थिति, राशियों का प्रभाव तथा भावों का विन्यास व्यक्ति के स्वभाव, उसकी प्रवृत्तियों, संभावनाओं और चुनौतियों का संकेत देते हैं. सूर्य आत्मबोध और जीवनशक्ति का प्रतिनिधित्व करता है, चंद्रमा मानसिक संरचना और भावनात्मक संवेदनशीलता का, मंगल ऊर्जा और क्रियाशीलता का, बुध बुद्धि और तर्क का, गुरु ज्ञान और विस्तार का, शुक्र संबंधों और सौंदर्यबोध का तथा शनि अनुशासन, कर्मफल और जीवन की कठिनाइयों का संकेत देता है. इन सभी तत्वों के समन्वित अध्ययन के माध्यम से ज्योतिषी व्यक्ति को यह समझाने का प्रयास करता है कि उसके जीवन की दिशा क्या है और वह किन परिस्थितियों में किस प्रकार का व्यवहार कर सकता है. इस प्रकार जन्मकुंडली केवल एक गणितीय संरचना नहीं, बल्कि एक जीवंत प्रतीकात्मक प्रणाली है, जो व्यक्ति को अपने जीवन के प्रति सजग बनाती है और उसे आत्मबोध की दिशा में अग्रसर करती है.

मनोवैज्ञानिक स्तर पर ज्योतिषीय परामर्श का प्रभाव अत्यंत गहरा होता है, क्योंकि यह व्यक्ति को अपनी भावनाओं को व्यक्त करने का एक सुरक्षित और स्वीकार्य माध्यम प्रदान करता है. जब व्यक्ति अपनी समस्याओं को किसी के समक्ष व्यक्त करता है और उसे यह अनुभव होता है कि उसकी बातों को समझा जा रहा है, तो उसके मन का बोझ कम हो जाता है. ज्योतिष इस प्रक्रिया को एक संरचित रूप देता है, जिसमें व्यक्ति अपने अनुभवों को ग्रहों और भावों की भाषा में समझने लगता है. यह प्रक्रिया उसे अपने भीतर की उलझनों को स्पष्ट करने में सहायता करती है और उसे यह अनुभव कराती है कि उसके जीवन की समस्याएँ केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि व्यापक जीवन-क्रम का एक हिस्सा हैं. इस प्रकार ज्योतिष व्यक्ति को मानसिक संतुलन प्रदान करता है और उसे अपने जीवन के प्रति अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित करता है.

इसके साथ ही, ज्योतिष व्यक्ति के आत्मविश्वास और आत्मस्वीकृति को भी बढ़ाता है. जब उसे यह बताया जाता है कि उसके भीतर कुछ विशिष्ट गुण और संभावनाएँ हैं, तो वह स्वयं को अधिक सक्षम और समर्थ अनुभव करता है. इसी प्रकार, जब उसे यह समझाया जाता है कि जीवन में आने वाली कठिनाइयाँ भी एक स्वाभाविक प्रक्रिया का हिस्सा हैं, तो वह उन्हें स्वीकार करने और उनसे सीखने के लिए तैयार हो जाता है. इस प्रकार ज्योतिष व्यक्ति को केवल समाधान ही नहीं देता, बल्कि उसे आत्मविकास की दिशा में भी प्रेरित करता है. यह उसे यह सिखाता है कि वह अपने जीवन की परिस्थितियों को समझे, उन्हें स्वीकार करे और अपने प्रयासों के माध्यम से उन्हें बेहतर बनाने का प्रयास करे.

यद्यपि ज्योतिष के अनेक सकारात्मक पक्ष हैं, तथापि इसके कुछ सीमित पक्ष भी हैं, जिनका ध्यान रखना आवश्यक है. यदि ज्योतिषी अपने ज्ञान का उपयोग व्यक्ति को भयभीत करने या उसे नियंत्रित करने के लिए करता है, तो यह न केवल अनैतिक है, बल्कि हानिकारक भी है. इसी प्रकार यदि व्यक्ति पूरी तरह से ज्योतिष पर निर्भर हो जाता है और अपने निर्णय स्वयं लेने की क्षमता को खो देता है, तो यह उसके आत्मविकास में बाधा उत्पन्न कर सकता है. इसलिए यह आवश्यक है कि ज्योतिषीय परामर्श संतुलित, सकारात्मक और सशक्त बनाने वाला हो, जिसमें व्यक्ति को स्वतंत्र रूप से सोचने और निर्णय लेने के लिए प्रेरित किया जाए. ज्योतिष का उद्देश्य व्यक्ति को निर्भर बनाना नहीं, बल्कि उसे आत्मनिर्भर बनाना होना चाहिए.

सामाजिक दृष्टिकोण से ज्योतिष एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक और परामर्शात्मक संस्था के रूप में कार्य करता है. विशेषकर भारतीय समाज में यह विवाह, शिक्षा, व्यवसाय और पारिवारिक संबंधों जैसे महत्वपूर्ण निर्णयों में मार्गदर्शन प्रदान करता है. यह केवल एक व्यक्तिगत प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह सामाजिक संरचना का भी एक अंग है, जो लोगों को सांस्कृतिक रूप से जोड़ता है और उन्हें एक साझा विश्वास प्रणाली के अंतर्गत लाता है. इस प्रकार ज्योतिष एक ऐसी व्यवस्था के रूप में कार्य करता है, जो व्यक्ति और समाज के बीच संतुलन स्थापित करने में सहायक होती है.

दार्शनिक दृष्टि से ज्योतिष मानव जीवन की अनिश्चितताओं को समझने और उन्हें अर्थ देने का एक प्रयास है. यह व्यक्ति को यह विश्वास दिलाता है कि जीवन की घटनाएँ पूर्णत: अनियमित नहीं हैं, बल्कि वे किसी न किसी प्रकार के नियम और क्रम के अंतर्गत घटित होती हैं. यह दृष्टिकोण व्यक्ति को मानसिक स्थिरता प्रदान करता है और उसे अपने जीवन के प्रति अधिक सजग बनाता है. साथ ही, यह उसे यह भी सिखाता है कि जीवन में कुछ तत्व ऐसे हैं जिन्हें वह बदल नहीं सकता, और कुछ ऐसे हैं जिन्हें वह अपने प्रयासों के माध्यम से प्रभावित कर सकता है.

जानिए पूजा घर किस दिशा में रखना होता है शुभ

हर घर में पूजा घर का विशेष महत्व होता है. यह केवल एक स्थान नहीं, बल्कि आस्था, शांति और सकारात्मक ऊर्जा का केंद्र माना जाता है. हिंदू परंपरा में पूजा घर को घर का सबसे पवित्र हिस्सा माना गया है, जहां परिवार के सदस्य ईश्वर की आराधना करते हैं और मानसिक सुकून प्राप्त करते हैं. लेकिन क्या आप जानते हैं कि पूजा घर को सही दिशा में रखना भी उतना ही जरूरी है जितना कि उसकी नियमित पूजा करना?

वास्तु शास्त्र के अनुसार, पूजा घर की दिशा का सीधा प्रभाव घर के वातावरण और परिवार के सदस्यों के जीवन पर पड़ता है. अगर पूजा घर सही दिशा में बना हो, तो यह घर में सुख-समृद्धि, शांति और सकारात्मक ऊर्जा को बढ़ाता है. वहीं गलत दिशा में बने पूजा घर से मानसिक तनाव, अस्थिरता और नकारात्मकता भी बढ़ सकती है.

वास्तु विशेषज्ञों के अनुसार, पूजा घर के लिए सबसे शुभ दिशा उत्तर-पूर्व यानी ईशान कोण मानी जाती है. यह दिशा देवताओं की दिशा मानी जाती है और इसे सबसे पवित्र माना गया है. कहा जाता है कि इस दिशा में पूजा करने से भगवान की कृपा जल्दी प्राप्त होती है और घर में सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह बना रहता है. अगर संभव हो, तो पूजा घर को हमेशा इसी दिशा में बनाना चाहिए.

अगर किसी कारणवश उत्तर-पूर्व दिशा में पूजा घर बनाना संभव न हो, तो पूर्व दिशा भी एक अच्छा विकल्प माना जाता है. पूर्व दिशा सूर्य देव की दिशा होती है और इसे ऊर्जा और नई शुरुआत का प्रतीक माना जाता है. इस दिशा में पूजा करने से मन में उत्साह और सकारात्मकता बनी रहती है.

वास्तु शास्त्र में यह भी कहा गया है कि पूजा घर को कभी भी दक्षिण दिशा में नहीं बनाना चाहिए. यह दिशा यम की दिशा मानी जाती है और इसे पूजा के लिए अशुभ माना गया है. इसके अलावा, पूजा घर को बाथरूम या शौचालय के पास भी नहीं बनाना चाहिए, क्योंकि इससे उसकी पवित्रता प्रभावित होती है. पूजा घर बनाते समय उसकी साफ-सफाई और सादगी का भी विशेष ध्यान रखना चाहिए. पूजा स्थान को हमेशा स्वच्छ और व्यवस्थित रखना चाहिए. यहां अनावश्यक चीजें नहीं रखनी चाहिए, क्योंकि इससे ध्यान भटकता है और सकारात्मक ऊर्जा में बाधा आती है.

सफलता के लिए इस मंत्र का करेंद्ध जाप

जीवन में सफलता और व्यापार में तरक्की पाने के लिए लोग अक्सर मेहनत के साथ-साथ आध्यात्मिक उपायों का भी सहारा लेते हैं. धार्मिक मान्यताओं के अनुसार कुछ विशेष मंत्र ऐसे होते हैं जिन्हें नियमित रूप से जपने से नकारात्मकता दूर होती है और सकारात्मक ऊर्जा का संचार बढ़ता है. माना जाता है कि इन मंत्रों के प्रभाव से कारोबार में रुकावटें कम होती हैं और आर्थिक स्थिति मजबूत होने लगती है. खासकर उन लोगों के लिए ये मंत्र बहुत लाभकारी माने जाते हैं जो व्यापार में लगातार उतार-चढ़ाव या नुकसान का सामना कर रहे हैं.

हिंदू धर्म में भगवान गणेश को विघ्नहर्ता और सफलता का देवता माना जाता है. इसलिए कारोबार में सफलता पाने के लिए सबसे पहले गणेश मंत्रों का जप शुभ माना जाता है. ऊं गं गणपतये नम:' मंत्र का नियमित जाप करने से बाधाएं दूर होती हैं और नए अवसरों के रास्ते खुलते हैं. इसी तरह भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी के मंत्र भी धन-समृद्धि और स्थिरता के लिए बहुत प्रभावी माने जाते हैं. मान्यता है कि सुबह स्नान के बाद शांत मन से इन मंत्रों का जाप करने से मन में आत्मविश्वास बढ़ता है और निर्णय लेने की क्षमता मजबूत होती है. इसके साथ ही कार्यस्थल में सकारात्मक वातावरण बनता है, जिससे व्यापार में प्रगति के योग बनने लगते हैं.

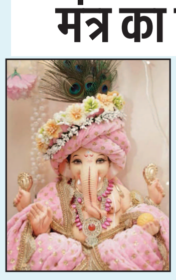

विशेषज्ञों का मानना है कि मंत्र केवल धार्मिक आस्था ही नहीं बल्कि मानसिक शक्ति का भी स्रोत होते हैं. जब व्यक्ति नियमित रूप से किसी मंत्र का जाप करता है, तो उसका ध्यान केंद्रित होता है और तनाव कम होता है.

घर में तुलसी का पौधा लगाना क्यों माना जाता है बेहद शुभ

भारत में तुलसी के पौधे को सिर्फ एक साधारण पौधा नहीं, बल्कि आस्था, स्वास्थ्य और सकारात्मक ऊर्जा का प्रतीक माना जाता है. सदियों से लोग अपने घरों में तुलसी का पौधा लगाते आ रहे हैं, और इसे विशेष रूप से पवित्र स्थान दिया जाता है. आज भी कई घरों में सुबह-शाम तुलसी की पूजा की जाती है. लेकिन क्या आप जानते हैं कि इसके पीछे सिर्फ धार्मिक ही नहीं, बल्कि वैज्ञानिक कारण भी छिपे हैं?

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, तुलसी को देवी लक्ष्मी का स्वरूप माना जाता है. कहा जाता है कि जिस घर में तुलसी का पौधा होता है, वहां सुख-समृद्धि और शांति बनी रहती है. तुलसी के पौधे के पास दीपक जलाने और जल चढ़ाने से घर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है और नकारात्मक शक्तियां दूर रहती हैं. यही वजह है कि हिंदू धर्म में तुलसी का विशेष महत्व है और इसे आंगन या घर के मुख्य द्वार के पास लगाया जाता है.

वास्तु शास्त्र के अनुसार भी तुलसी का पौधा घर में शुभ फल देने वाला माना गया है. विशेषज्ञों का मानना है कि तुलसी का पौधा घर के उत्तर, उत्तर-पूर्व या पूर्व दिशा में लगाना सबसे अच्छा होता है. इससे घर में सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह बढ़ता है और परिवार के सदस्यों के जीवन में सुख-शांति बनी रहती है.

अगर वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखें, तो तुलसी के पौधे में कई औषधीय गुण पाए जाते हैं. तुलसी की पत्तियां एंटीबैक्टीरियल और एंटीवायरल गुणों से भरपूर होती हैं, जो कई बीमारियों से बचाने में मदद करती हैं. नियमित रूप से तुलसी का सेवन करने से सर्दी-खांसी, बुखार और गले की समस्याओं में राहत मिलती है. इसके अलावा, यह इम्यून सिस्टम को मजबूत बनाने में भी सहायक है. तुलसी का पौधा पर्यावरण के लिए भी बेहद लाभकारी है. यह हवा को शुद्ध करता है और ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ाता है.

अक्षय तृतीया पर करें ये शुभ काम

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार यह दिन स्वयं सिद्ध मुहूर्त होता है, यानी इस दिन किसी भी शुभ कार्य को करने के लिए अलग से मुहूर्त देखने की आवश्यकता नहीं होती. यही कारण है कि इस दिन विवाह, गृह प्रवेश, नया व्यवसाय या किसी भी नए काम की शुरुआत को बेहद शुभ माना जाता है.

अक्षय तृतीया को सनातन धर्म में अत्यंत शुभ और फलदायी पर्व माना जाता है. मान्यता है कि इस दिन किए गए पुण्य कार्यों का फल कभी समाप्त नहीं होता. इस बार 19 अप्रैल 2026 को मनाई जाने वाली अक्षय तृतीया पर यदि विधि-विधान से पूजा, दान और कुछ खास नियमों का पालन किया जाए, तो मां लक्ष्मी और भगवान विष्णु की विशेष कृपा प्राप्त होती है. आइए जानते हैं इस पावन दिन क्या करना चाहिए और किन कार्यों से बचना जरूरी है.

अक्षय तृतीया, जिसे आखा तीज के नाम से भी जाना जाता है, वैशाख माह के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को मनाई जाती है. धार्मिक मान्यताओं के अनुसार यह दिन स्वयं सिद्ध मुहूर्त होता है, यानी इस दिन किसी भी शुभ कार्य को करने के लिए अलग से मुहूर्त देखने की आवश्यकता नहीं होती. यही कारण है कि इस दिन विवाह, गृह प्रवेश, नया व्यवसाय या किसी भी नए काम की शुरुआत को बेहद शुभ माना जाता है. इस दिन की शुरुआत सुबह जल्दी उठकर स्नान और ध्यान से करनी चाहिए. यदि संभव हो तो गंगा स्नान का विशेष महत्व माना गया है, अन्यथा घर पर स्नान के जल में गंगाजल मिलाकर भी पवित्र स्नान किया जा सकता है. इसके बाद भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी की विधि-विधान से पूजा करनी चाहिए. मान्यता है कि इस दिन दोनों की संयुक्त पूजा करने से घर में सुख-समृद्धि और धन की कभी कमी नहीं होती.

अक्षय तृतीया पर दान का विशेष महत्व बताया गया है. इस दिन अपनी श्रद्धा और क्षमता के अनुसार जल, सत्तू, फल, घी, शहद या मिट्टी का घड़ा दान करना अत्यंत पुण्यदायक माना जाता है. इसके अलावा गर्मी के मौसम को देखते हुए पंखा, छाता, जूते-चप्पल जैसी वस्तुओं का दान करने से भी विशेष फल मिलता है. यह न केवल धार्मिक दृष्टि से लाभकारी है, बल्कि सामाजिक रूप से भी जरूरतमंदों की सहायता करने का अवसर देता है.

धार्मिक मान्यता के अनुसार अक्षय तृतीया के दिन किसी को पैसा उधार देना भी शुभ नहीं माना जाता. साथ ही, घर में अंधेरा नहीं रखना चाहिए, विशेषकर मुख्य द्वार पर दीपक जलाकर मां लक्ष्मी का स्वागत करना चाहिए. यह घर में सकारात्मक ऊर्जा के प्रवेश का प्रतीक माना जाता है.

सोना खरीदने की परंपरा भी अक्षय तृतीया से जुड़ी हुई है. ऐसा माना जाता है कि इस दिन सोना या चांदी खरीदने से घर में धन-समृद्धि बढ़ती है. हालांकि यदि सोना खरीदना संभव न हो, तो चांदी या अन्य धातु की पवित्र वस्तुएं, जैसे शंख, श्री यंत्र या तुलसी का पौधा लाना भी शुभ माना जाता है.

वहीं इस दिन कुछ कार्यों से बचना भी जरूरी है. सूर्योदय के बाद तक सोते रहना अशुभ माना जाता है, इसलिए समय पर उठना चाहिए. बाल या दाढ़ी कटवाने जैसे कार्य इस दिन नहीं करने चाहिए. इसके अलावा तामसिक भोजन और किसी भी प्रकार के विवाद या झगड़े से दूर रहना चाहिए, क्योंकि यह दिन शांति और सकारात्मकता का प्रतीक है.

इस प्रकार अक्षय तृतीया केवल एक पर्व नहीं, बल्कि जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने का एक अवसर भी है. यदि इस दिन श्रद्धा, भक्ति और सही नियमों के साथ पूजा-पाठ और दान किया जाए, तो यह जीवन में सुख, शांति और समृद्धि लेकर आता है.

राशिफल

दिनांक- 12 से 18 अप्रैल 2026 तक

ज्योतिषाचार्य पंडित
प्रियंका नारायणशंकर व्यास,
कोतवाली बाजार,
जबलपुर मो.नं. 098266-21998

साप्ताहिक ग्रहस्थिति- इस सप्ताह सूर्य मीन राशि में ता. 14 को 11/43 दिन से मेष राशि में, मंगल मीन राशि में, बुध मीन राशि में, गुरू मिथुन राशि में, शुक्र मेष राशि में, शनि मीन राशि में, राहु कुम्भ राशि में, केतु सिंह राशि में और चन्द्रमा मकर कुम्भ मीन और मेष राशि में संचरण करेगा.

ग्रहयोगों का प्रभाव :- ता. 14 को अश्विनी मेषे रवि के प्रभाव से कपास, रूई, सूत, नारियल, सुपारी, लौंग, इलायची, बादाम, छुआरा, हींग, मैथी, गुड, खांड, शक्कर, तिल, तेल, सरसों, सभी प्रकार के फल में अच्छी तेजी का लाभ मिलेगा. चावल, गेहूं, चना, जौ, मटर, अरहर, उडद, मूंग में अस्थिरता रहेगी. ता. 16 को शुक्र कृतिका नक्षत्र में आकर रूई, सूत, कपास, चांदी में कुछ मंदी आती है. हींग, तेल, तिल, सरसों, गुड, खांड, घी में तेजी के बाद स्थिरता आती है. सोने में सामान्यत: तेजी का रूख रहेगा. आभूषण, इत्र, वस्त्र, में तेजी होगी.

पर्व-व्रत-त्यौहार :

मंगलवार	14 अप्रैल को	सूर्य मेष संक्रांति,
बुधवार	15 अप्रैल को	प्रदोष व्रत, शिवचर्तुदशी व्रत, खरमास समाप्त,
शुक्रवार	17 अप्रैल को	वैशाख अमावस, सतुवाई अमावस्या, स्नानदान श्राद्ध अमावस्या,
शनिवार	18 अप्रैल को	चन्द्रदर्शन

मेष

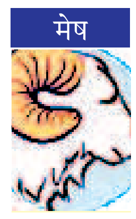

इस सप्ताह अच्छी तरह सोच विचार कर ही अपनी प्राथमिकतायें तय करेंगे, परस्पर विचारों का आदान प्रदान करने से अच्छी बात बन सकती है, अतिरिक्त जिम्मेदारियों का बोझ उठाना पड़ेगा, विशिष्टजनों से आपकी प्रशंसा होगी, भूमि भवन घर खरीदी बिक्री फायदेमंद रहेंगे, सामाजिक सक्रियता बढ़ेगी, व्यापार एवं राजकीय कारणों से की गई यात्रा मे बेहतर परिणाम होंगे.

वृषभ

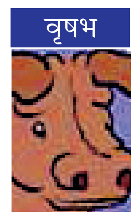

साझेदारों के साथ व्यक्तिगत संबंध भी मजबूत होंगे, काननी मामले में एवं प्रापर्टी संबंधी विवाद आसानी से सुलझ सकते हैं, जान पहचान का दायरा बढ़ेगा, नौकरी पेशा व्यक्तियों की पदोन्नति संभव है, कार्यक्षेत्र में आप संतुष्ट रहेंगे, अपने स्वास्थ्यपर विशेष ध्यान दें, घर में मांगलिक कार्य की योजना बनेगी, बुजुर्गो के स्वास्थ्य पर ध्यान दें.

मिथुन

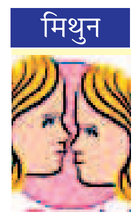

इस सप्ताह सोच समझकर ही आप आगे बढ़ना चाहेंगे, आप पूरे होश एवं जोश के साथ कार्य में जुट जायेंगे, भविष्य में लाभ की योजनाओं की शुरूआत हो सकती है, अनुसंधान एवं कला के क्षेत्र में सफलता मिलेगी, उच्च पदस्थ लोगों के साथ सामूहिक कार्य में भाग लेंगे, जीवनसाथी और बच्चों को आपसे अपेक्षाएं बढ़ सकती हैं, सौहार्द्रपूर्ण माहौल रहेगा, नये संबंध बनेंगे.

कर्क

अपने मन में चल रहे अर्न्तद्वंद को दूर कर कार्य में जुट जाने का समय है, वरिष्ठों का सहयोग बना रहेगा, अपने स्वास्थ्य और सामाजिक स्थिति पर अत्याधिक खर्च करेंगे, व्यवसाय में किसी करीबी मित्र को साझेदार बना सकते हैं, विशिष्टजनों से आपकी प्रशंसा होगी, सप्ताहान्त में स्वास्थ्य में गिरावट की संभावना है, श्रम उतना ही करें, जितना शरीर साथ दे.

सिंह

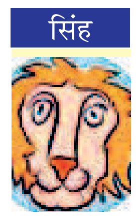

इस सप्ताह व्यापार यात्राऔर धार्मिक कार्यो में आपकी रूचि बढ़ेगी, सपफलता की ओर कदम बढ़ेंगे, कार्य पूर्ण करने में सहयोगी का रवैया आपके प्रति सहयोगात्मक रहेगा, जानपहचान का दायरा बढ़ेगा, आप किसी बडी योजना में शामिल हो सकते हैं, परन्तु यह आपकी कार्यक्षमता केअनुकूल नहीं होगा, आपको कड़ी मेहनत और योजनाबद्ध तरीके से सफलता मिलेगी.

कन्या

सप्ताह आपका काफी उतार चढ़ाव वाला रहेगा, कार्य की व्यस्तता रहेगी,अधिकारियों से तालमेल बनाकर आगे बढ़े, सामाजिक क्षेत्रमें सक्रियता बढ़ेगी, व्यापार में कुछ नये साझेदारों को शामिल करने की कोशिश होगी, किसी करीबी मित्र अथवा रिश्तेदार का सहयोग मिलेगा, सप्ताह के अन्त में अति विश्वास आपको संकट में डाल सकता है.

तुला

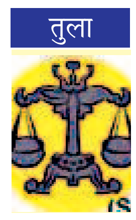

इस सप्ताह सामाजिक कार्यो में बढ़चढ़कर हिस्सा लेंगे, जिस कार्यमें आप हाथ डालेंगे,सफलता मिलेगी,वित्तीय स्थिति पहले से बेहतर होगी, परन्तु आप अवसरों को गंवा सकते हैं, कैरियर और सामाजिक स्थिति में सुधार होगा, नये वाहन की योजना बन सकती है, सप्ताहान्त में सोच समझकर और कार्यक्षमता के अनुरूप कार्य होगा, घरेलू वातावरण खुशनुमा रहेगा, मनोरंजक यात्रा होगी.

वृश्चिक

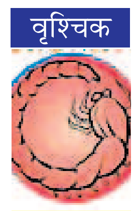

इस सप्ताह महत्वाकांक्षा बढ़ेगी, घरेलू मामलों में विपरीत स्थिति का सामना करना पड़ेगा, किसी पूज्य व्यक्ति की सलाह उपयोगी रहेगी, सप्ताह के प्रारंभ में महत्व के कार्य करने की बजाय रोजमर्रा की दिनचर्या ही निभाने का प्रयास करें, व्यवसाय में आप किसी अपरिचित पर अत्याधिक विश्वास न करें, स्वास्थ्य नरम गरम रहेगा, बच्चों के लिये कुछ हद तक परेशान रह सकते हैं.

धनु

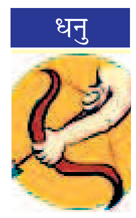

इस सप्ताह कार्यस्थल पर आपकी योग्यता और कार्य को उचित मान प्रतिष्ठा सम्मान मिलेगा, अपनी बात मनवाने के लिये संघर्ष करना पड़ेगा, यह सप्ताह कैरियर की दृष्टि से मनोवांछित साबित होगा, आर्थिक स्थिति पहले से बेहतर होगी, दाम्पत्य जीवन सुख समृद्धि का भाव कायम रहेगा, कारोबार में ईमानदारी से ध्यान दें, भौतिक सुख साधनों में रूचि बढ़ेगी, विरोधियों से सतर्क रहें.

मकर

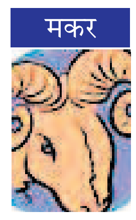

इस सप्ताह व्यापारिक और कैरियर की दृष्टि से महत्वपूर्ण रहेगा, विद्यार्थी अपनी पढ़ाई के साथ प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी में व्यस्त रहेंगे, बच्चों की भावनाओं का ध्यान रखें, सप्ताह के मध्य महत्वपूर्ण निर्णय लेना पड़ेगा, व्यवसाय के क्षेत्र में विरोधियों से सतर्क रहें, किसी करीबी मित्र के साथ दूर दमीन की यात्रा पर जा सकते हैं, यात्रा के दौरान अनावश्यक खर्च से बचें.

कुम्भ

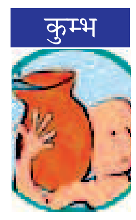

इस सप्ताह प्रगति की दिशा में आगे बढ़ेगे,अपनी योग्यता और सामर्थ्य का उपयोग सफलता पाने के लिये करेंगे, आपके व्यवहार और सोच में व्यापक बदलाव आ सकता है, जमिथुन जायजाद की खरीदी बिक्री और ऋण के लेनदेन से लाभ होगा, मीननेता अपने हित की रक्षा के लिये प्रयास करेंगे, जीवनसाथी का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है, गुमी वस्तु मिलने का योग है.

मीन

कार्यक्षेत्र में कैरियर में बड़ी सफलता मिलेगी, व्यवसायिक साझेदारों में सावधानी रखें, महत्पूर्ण निर्णय होंगे, जीवनसाथी का सहयोग कार्यक्षेत्र में नईसंभावनायें देता है, नई सोच व कार्यशैली लाभकारी सिद्ध होगी, मांगलिक कार्यो पर विचार होगा, कामकाजी महिलाओं को परेशानी हो सकती है. आपसी मामले सावधानी से हल करें.